REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

स्नातक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में छात्राध्यापकों द्वारा पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति और उपयोग के उद्देश्यों का अध्ययन

डॉ. मुरलीधर मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान.

सारांश:

स्नातक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति, औसतन पुस्तकालय उपयोग अवधि एवं पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्यों को जानने हेतु 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के न्यादर्श में दो अध्यापक शिक्षा संस्थानों का चयन सोद्देश्य पूर्ण ढंग से तथा उनमें अध्ययनरत में 40 छात्राध्यापकों (प्रत्येक से 20-20) छात्राध्यापकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया गया। इस अध्ययन की उद्देश्य पूर्ति के लिए उपकरण के रूप में पंजिका, अवलोकन प्रपत्र एवं असंरचित साक्षात्कार प्रपत्र का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत आवृत्ति विश्लेषण, प्रतिशत विश्लेषण एवं रेखाचित्रात्मक प्रस्तुतीकरण का उपयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि अधिकाँश छात्राध्यापक प्रतिदिन या छात्राध्यापक सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं जबकि कतिपय छात्राध्यापक ही सप्ताह में केवल दो बार या इससे कम पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। लगभग आधे छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह 1 से 3 घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है। एक चौथाई छात्राध्यापक 7-15 या इससे अधिक घण्टों तक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। आधे से अधिक छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह 4-6 या इससे अधिक घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है। अधिकतर छात्राध्यापक पाठ्यक्रम की तैयारी व पाठ्यक्रम से सम्बन्धित ज्ञान की प्राप्ति के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

मुख्य शब्दावली: अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, छात्राध्यापक, पुस्तकालय-उपयोग, उपयोग के उद्देश्य, वर्णनात्मक सर्वेक्षण

१. प्रस्तावना:

पुस्तकालय लोक शिक्षा की सजीव शक्ति है, जिसके द्वारा आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षिक विचारों को आधार मिलता है। ऐसे आधारों को प्राप्त करने की दृष्टि से पुस्तकालय को त्रिमुखी साधन माना गया, जो कि पुस्तकों, पाठकों तथा कर्मचारियों का समन्वय है। जिस प्रकार बिना हृदय के मनुष्य जीवित नहीं रह सकता है, उसी प्रकार कोई भी अध्यापक शिक्षा संस्थान बिना उपयुक्त पुस्तकालय के अपनी गतिविधियों को सही दिशा में निर्देशित नहीं कर सकता है। इसी कारण पुस्तकालय

को शिक्षण संस्था का हृदय माना जाता है। जिसके सहयोग से शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन होता है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के दो प्रमुख पक्ष हैं - (1) सैद्धान्तिक पक्ष (2) प्रायोगिक पक्ष। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की निश्चित अवधि में छात्राध्यापकों में अध्यापकोचित व्यवहार व गुण से सम्बन्धित निवेश के लिए यह दोनों पक्ष आवश्यक हैं। सैद्धान्तिक पक्ष का सम्बन्ध जहाँ अध्ययन-अध्यापन से सम्बन्धित समस्त आधारभूत जानकारियों से है, वहीं प्रायोगिक पक्ष का सम्बन्ध अध्यापन विद्या/कौशल की प्राप्ति से है। सैद्धान्तिक ज्ञान का उपयोग करते हुए छात्राध्यापक अध्यापन विद्या/कौशल में दक्षता प्राप्त कर लें, इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा इन दोनों पक्षों के लिए निवेश दिया जाना अपेक्षित है। पुस्तकालय जहाँ छात्राध्यापकों के सैद्धांतिक पक्ष को विकसित करने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवा करए एक सूचना-संसाधन के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करता हैए वहीं विभिन्न क्षेत्र आधारित अनुभवों से छात्राध्यापकों को परिचित कराने की सामग्री का समावेश रखता है।

जब छात्राध्यापक के पास अध्यापक शिक्षक के साथ अन्तःक्रिया के पर्याप्त अवसर रहते हैं, तब छात्राध्यापक प्रति सप्ताह औसतन कितनी बार पुस्तकालय का उपयोग करते हैं; प्रति सप्ताह औसतन कितनी अवधि तक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं; किन-किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैंद इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए स्नातक स्तरीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में छात्राध्यापकों द्वारा पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति और उद्देश्यों का अध्ययन किया गया।

2. अध्ययन उद्देश्य

इस अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं -

1. छात्राध्यापकों द्वारा किये जाने वाले प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति का अध्ययन करना।
2. छात्राध्यापकों द्वारा किये जाने वाले प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय उपयोग अवधि का अध्ययन करना।
3. छात्राध्यापकों द्वारा किये जाने वाले पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्यों का अध्ययन करना।

3. अध्ययन विधि

इस अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए यथास्थैतिक आधार पर प्रदत्तों का संकलन करते हुए अध्ययन की पूर्णता हेतु 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि' का उपयोग किया गया।

4. जनसंख्या एवं न्यादर्शन

राजस्थान राज्य में स्थित अध्यापक शिक्षा संस्थानों में माध्यमिक शिक्षा स्तर अध्यापन के लिए अध्यापक तैयार करने के क्रम में औपचारिक रूप से संचालित स्नातक स्तरीय 'बी.एड.' कार्यक्रम के माध्यम से अध्यापक शिक्षा प्राप्त कर रहे सभी छात्राध्यापक (student-teachers) इस अध्ययन की जनसंख्या हैं। इस अध्ययन के न्यादर्श में दो अध्यापक शिक्षा संस्थानों का चयन सोद्देश्य पूर्ण ढंग से तथा उनमें अध्ययनरत में 40 छात्राध्यापकों (प्रत्येक से 20-20) छात्राध्यापकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया गया।

5. अध्ययन उपकरण

इस अध्ययन की उद्देश्य पूर्ति के लिए उपकरण के रूप में पंजिकाए अवलोकन प्रपत्र एवं असंरचित साक्षात्कार प्रपत्र का उपयोग किया गया।

6. प्रदत्तों की प्रकृति

इस अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों (पंजिका, अवलोकन प्रपत्र एवं असंरचित साक्षात्कार प्रपत्र) की सहायता से संकलित जानकारी आरम्भिक रूप में विवरणात्मक प्रकार की थी। प्राप्त जानकारियों का विश्लेषण करते हुए उन्हें मात्रात्मक रूप में परिवर्तित किया गया।

7. सांख्यिकीय प्रविधि

इस अध्ययन में प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकी के अंतर्गत आवृत्ति विश्लेषण, प्रतिशत विश्लेषण एवं रेखाचित्रात्मक प्रस्तुतीकरण का उपयोग किया गया।

8. प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

संकलित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या इस प्रकार है-

(अ) प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति

प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग की आवृत्ति जानने के लिए पुस्तकालय में संधारित पंजिका एवं न्यादर्श में चयनित छात्राध्यापकों का नियमित अवलोकन किया गया। पाँच मिनिट से अधिक अवधि के लिए पुस्तकालय का उपयोग करने पर एक आवृत्ति प्रदान की गयी। सत्र पर्यंत संकलित आवृत्तियों की गणना एवं विश्लेषण किया गया। इस प्रकार छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग से सम्बन्धित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तालिका एवं आरेख चित्र 1 की सहायता से किया गया है।

तालिका 1 : छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग

क्र.सं.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	प्रतिदिन	21	52.5
2.	सप्ताह में एक बार	0	0
3.	सप्ताह में दो बार	2	5
4.	सप्ताह में दो से अधिक बार	16	40
5.	कभी-कभी	1	2.5
6.	कभी नहीं	0	0

आरेख चित्र 1: छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग

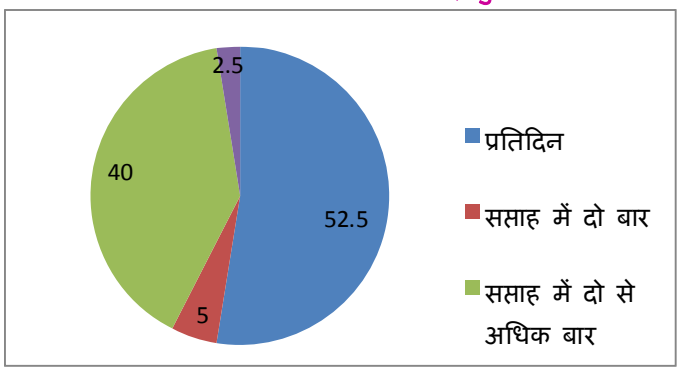

तालिका एवं वृतचित्र 1 की सहायता से छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह किये जाने वाले पुस्तकालय उपयोग की आवृत्ति से सम्बन्धित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण किया गया है। इस तालिका एवं वृतचित्र के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 52.5 प्रतिशत छात्राध्यापक प्रतिदिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। 40 प्रतिशत छात्राध्यापकों द्वारा सप्ताह में दो बार से अधिक किया जाता है। सप्ताह में दो बार उपयोग 5 प्रतिशत और केवल 2.5 प्रतिशत छात्राध्यापकों द्वारा कभी-कभी पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। पुस्तकालय-उपयोग सप्ताह में एक बार एवं कभी नहीं करने वाले छात्राध्यापकों की संख्या शून्य है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आधे से अधिक छात्राध्यापक प्रतिदिन पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। एक तिहाई से अधिक छात्राध्यापक सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। बहुत कम छात्राध्यापक सप्ताह में

दो बार या कभी-कभी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। पुस्तकालय-उपयोग सप्ताह में केवल एक बार एवं कभी नहीं करने वाले छात्राध्यापकों की संख्या शून्य है।

समेकित रूप से 92.5 प्रतिशत छात्राध्यापक प्रतिदिन या छात्राध्यापक सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। सप्ताह में दो बार या इससे कम पुस्तकालय का उपयोग करने वाले छात्राध्यापकों का प्रतिशत केवल 7.5 है। यहां तक कि पुस्तकालय-उपयोग सप्ताह में केवल एक बार एवं कभी नहीं करने वाले छात्राध्यापकों की संख्या शून्य है। उपर्युक्त विवेचन से इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकाँश छात्राध्यापक प्रतिदिन या छात्राध्यापक सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। जबकि कतिपय छात्राध्यापक ही सप्ताह में केवल दो बार या इससे कम पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

(ब) प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय उपयोग अवधि

प्रति सप्ताह पुस्तकालय-उपयोग की अवधि जानने के लिए पुस्तकालय में न्यादर्श में चयनित छात्राध्यापकों का नियमित अवलोकन किया गया। पाँच मिनिट से अधिक अवधि के लिए पुस्तकालय का उपयोग करने पर उपयोग अवधि का अंकन किया गया। सत्र पर्यंत संकलित उपयोग अवधि की गणना एवं विश्लेषण किया गया। इस प्रकार छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग की अवधि से सम्बन्धित प्रदतों का प्रस्तुतीकरण तालिका एवं आरेख चित्र 2 की सहायता से किया गया है।

तालिका 2: प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय उपयोग अवधि

क्र.सं.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	1-3 घण्टे	19	47.5
2.	4-6 घण्टे	11	27.5
3.	7-10 घण्टे	7	17.5
4.	11-15 घण्टे	3	7.5
5.	16 से अधिक घण्टे	0	0

आरेख चित्र 2: प्रति सप्ताह औसतन पुस्तकालय उपयोग अवधि

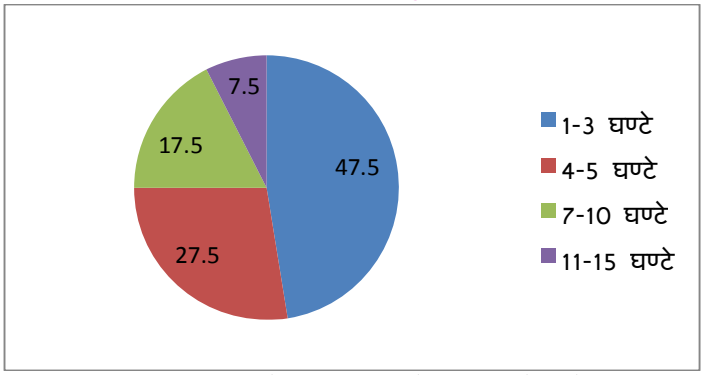

तालिका एवं आरेख चित्र 2 की सहायता से छात्राध्यापकों द्वारा किये गये प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग की अवधि प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका एवं वृतचित्र के अध्ययन से यह पता चलता है कि 47.5 प्रतिशत छात्राध्यापक 1-3 घण्टे, 27.5 प्रतिशत 4-6 घण्टे, 17.5 प्रतिशत 7-10 घण्टे तथा 7.5 प्रतिशत 11-15 घण्टे पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

उपर्युक्त विश्लेषण से पता चलता है कि लगभग आधे छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह 1 से 3 घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है। एक चौथाई छात्राध्यापक 7-15 या इससे अधिक घण्टों तक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। आधे से अधिक छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह तक 4-6 या इससे अधिक घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है।

(स) पुस्तकालय उपयोग का उद्देश्य

प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग का उद्देश्य जानने के लिए पुस्तकालय में न्यादर्श में चयनित छात्राध्यापकों के लिए सूचना प्रपत्र का विकास किया गया तथा नियमित अवलोकन किया गया। सूचना प्रपत्र एवं अवलोकन में अंतर की स्पष्टता के लिए असंरचित साक्षात्कार किया गया। सत्र पर्यंत संकलित सूचनाओं का विश्लेषण किया गया। इस प्रकार पुस्तकालय उपयोग के उद्देश्य से सम्बन्धित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तालिका एवं आरेख चित्र 3 की सहायता से किया गया है।

तालिका 3 : पुस्तकालय उपयोग का उद्देश्य

क्र.सं.	उद्देश्य विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	दत्त कार्य की पूर्ति	7	17.5
2.	परीक्षा की तैयारी	11	27.5
3.	अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति	18	45
4.	नोट्स बनाने	4	10
5.	पूर्व ज्ञान-प्राप्ति	4	10
6.	अग्रिम सूचना प्राप्ति	6	15
7.	अतिरिक्त/विशेष अध्ययन	15	37.5
8.	मनोरंजन	2	5
9.	समाचार/रोजगार समाचार पढ़ना	12	30
10.	समय का सदुपयोग	1	2.5
11.	अन्य (गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने)	1	2.5

आरेख चित्र 3 : पुस्तकालय उपयोग का उद्देश्य

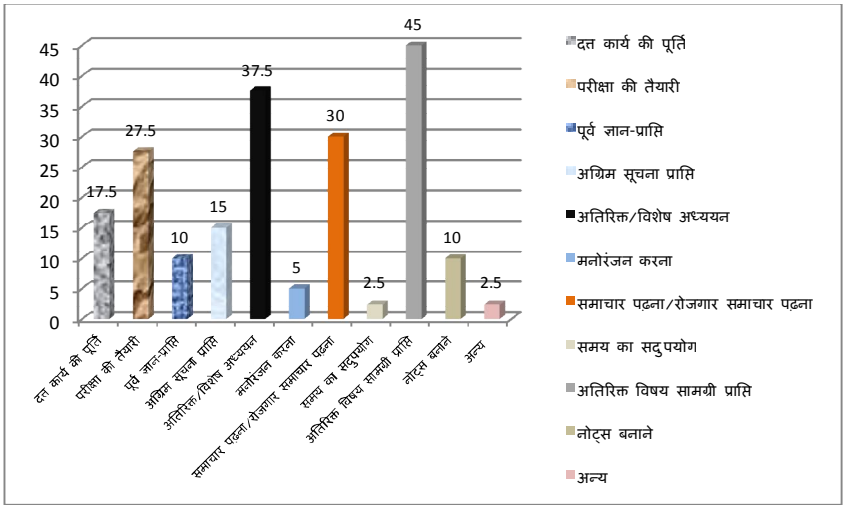

तालिका एवं आरेख चित्र 3 छात्राध्यापकों के पुस्तकालय उपयोग से सम्बन्धित है। इस तालिका के सभी उद्देश्यों को उनकी प्रकृति के अनुसार तीन श्रेणियों- (1) पाठ्यक्रम तैयारी (क्र.सं. 1 से 4), (2) ज्ञान प्राप्ति (क्र.सं. 5 से 7) तथा (3) अन्य उपयोग (क्र.सं. 8 से 12) में वर्गीकृत करने पर यह ज्ञात होता है कि छात्राध्यापकों में से पाठ्यक्रम की तैयारी के अंतर्गत 45 प्रतिशत अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति, 27.5 प्रतिशत परीक्षा की तैयारी, 17.5 प्रतिशत दत्त कार्य की पूर्ति एवं 10 प्रतिशत नोट्स बनाने के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। ज्ञान प्राप्ति के क्रम में 37.5 प्रतिशत अतिरिक्त/विशेष अध्ययन, 15 प्रतिशत अग्रिम सूचना प्राप्ति एवं 10 प्रतिशत पूर्व ज्ञान की प्राप्ति के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। अन्य उपयोग के अंतर्गत सर्वाधिक 30 प्रतिशत समाचार या रोजगार समाचार पढ़ने के लिए, 5 प्रतिशत मनोरंजन तथा 2.5 प्रतिशत समय का सदुपयोग और गत वर्षों के प्रश्न पत्र पढ़ने और नयी पुस्तकों की जानकारी लेने हेतु पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर छात्राध्यापक पाठ्यक्रम की तैयारी व पाठ्यक्रम से सम्बन्धित ज्ञान की प्राप्ति के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

निष्कर्ष विवेचना एवं निहितार्थ

संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण से यह पाया गया कि अधिकाँश छात्राध्यापक प्रतिदिन या छात्राध्यापक सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं जबकि कतिपय छात्राध्यापक ही सप्ताह में केवल दो बार या इससे कम पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम से प्रभावी अध्यापकों का विकास किया जा सके इस हेतु अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की निश्चित अवधि में छात्राध्यापकों में अध्यापकोचित व्यवहार व गुण से सम्बन्धित निवेश के लिए सैद्धान्तिक (अध्ययन-अध्यापन से सम्बन्धित समस्त आधारभूत ज्ञान आधार) एवं प्रायोगिक पक्ष (अध्यापन विद्या/कौशल की प्राप्ति हेतु संक्रियात्मक व्यवहार) के मध्य समन्वय अपेक्षित होता है। अर्थात् सैद्धान्तिक ज्ञान का उपयोग करते हुए छात्राध्यापक अध्यापन विद्या/कौशल में दक्षता प्राप्त कर लें, इसके लिए अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा इन दोनों पक्षों के लिए निवेश दिया जाना अपेक्षित है। पुस्तकालय जहाँ छात्राध्यापकों के सैद्धांतिक पक्ष को विकसित करने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवा कर, एक सूचना-संसाधन के रूप में स्वयं को प्रस्तुत कर सकता है, वहीं विभिन्न क्षेत्र आधारित अनुभवों से छात्राध्यापकों को परिचित कराने का सामर्थ्य भी रखता है। अधिकाँश छात्राध्यापकों का प्रतिदिन या छात्राध्यापक सप्ताह में दो बार से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करना अच्छा संकेत है। पुस्तकालय में स्तरीय पाठ्य सामग्री के संग्रह को और समृद्ध बना कर, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में छात्राध्यापकों की सहभागिता बढ़ा कर, अध्यापक शिक्षा संस्थान में शैक्षणिक माहौल में सुधार के साथ ही अभिप्रेरणा का उपयोग करते हुए प्रति सप्ताह पुस्तकालय उपयोग की आवृत्ति में सुधार किया जा सकता है।

लगभग आधे छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह 1 से 3 घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है। एक चौथाई छात्राध्यापक 7-15 या इससे अधिक घण्टों तक पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। आधे से अधिक छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह 4-6 या इससे अधिक घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाता है। लगभग आधे छात्राध्यापकों द्वारा प्रति सप्ताह केवल 1 से 3 घण्टों तक पुस्तकालय उपयोग किया जाना संतोषजनक नहीं है। छात्राध्यापक अधिकाधिक पुस्तकालय उपयोग के लिए अभिप्रेरित हों इस क्रम में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अंत:क्रियात्मक एवं सहभागिता आधारित बना कर, अधिगम लक्ष्य, दत्त कार्य (प्रायोजना एवं अधिन्यास) प्रदान कर ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की जा सकती हैं जिनमें पुस्तकालय का उपयोग अपेक्षित हो।

अधिकतर छात्राध्यापक पाठ्यक्रम की तैयारी व पाठ्यक्रम से सम्बन्धित ज्ञान की प्राप्ति के लिए पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। इसे सुखद माना जा सकता है लेकिन पूर्व ज्ञान-प्राप्ति, अग्रिम सूचना प्राप्ति, अतिरिक्त विषय सामग्री प्राप्ति, अतिरिक्त/विशेष अध्ययन एवं दत्त कार्य की पूर्ति के साथ ही मनोरंजन, नयी पुस्तकों की जानकारी लेने, अपने अधिगम के अनुरूप विषय सामग्री का विकास करने और अध्यापक शिक्षा संस्थान में अपनी उपस्थिति के समय का सदुपयोग करने के क्रम में छात्राध्यापकों को और संकेंद्रित अभिप्रेरण एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

गुप्ता, विजया (1977). चिल्ड्रेन लिटरेचर एंड रीडिंग हैबिट. न्यू देल्ही. दीप एंड दीप पब्लिशर्स.

जुसवुसिएने, पाल्मिरा एंड तौत्केविकिएने, गिन्तारे (2004). दा लाइब्रेरी लर्निंग एनवायरनमेंट अस अ पार्ट ऑफ़ यूनिवर्सिटी एजुकेशनल एनवायरनमेंट. पेपर प्रेसेंटेड एट दा यूरोपियन कांफ्रेंस ऑन एजुकेशनल रिसर्च. यूनिवर्सिटी ऑफ़ क्रीट. सेप्टेम्बर, 22-25. http://www.leeds.ac.uk/educol/documents/00003737.html

त्रिपाठी, एस.एस. एवं अन्य (1999). सन्दर्भ एवं सूचना सेवा के नवीन आयाम. आगरा. वाई.के. पब्लिशर्स.

यू.सी.आई.एस.ए. (2000). लर्निंग रिसोर्स फॉर टीचर एजुकेशन: अ गाइड टू बेस्ट प्रैक्टिस: अ प्रोजेक्ट रिपोर्ट. Retrieved may, 2003. http://www.ucisa.ac.uk/resources/docs/library/lrittreport.

व्यास, एस.डी. (1997). पुस्तकालय संगठन एवं प्रबंध. जयपुर. पंचशील प्रकाशन.